Lecture - 104.

असहयोग आंदोलन में बिहार की भूमिका

- Mamta Rani
Guest Assist. Prof.
Deptt. of History
SNSRKS college,
Saharsa.

BA part - IIIrd.

प्र. असहयोग आन्दोलन में भारत बिहार की भूमिका का वर्णन कीजिए।

असहयोग आन्दोलन (1920)

उत्तर →

कारण	कार्यक्रम	आरंभ एवं बिहार
* द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव	* रचनात्मक	* 1 अगस्त 1920
* रौलेक्ट एक्ट (1919)	* नकारात्मक ↓ बहिष्कार	* डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ब्रजकिशोर प्रसाद
* जालियावाला बाग हत्याकाण्ड (1919)	* सूत काटना	* मजहरूल हक (मदरलैण्ड (पत्रिका) स्वैरूमिया - सदाकत आश्रम की स्थापना
* खिलाफत आन्दोलन (1919)	* 1 करोड़ सदस्य बनाना	* बिहार शरीफ मे उलेमा सम्मेलन
	* 2 पैसा सहायता मुल्क	* पटना गया, मांझी पर विद्यालयों की स्थापना
	* तिलक स्वराज्य फण्ड की स्थापना	* 1921 बिहारी, विद्यापीठ देवघर विद्यापिठ की स्थापना।
	* सत्याग्रह सभा की स्थापना	

भारत मे राष्ट्रीय आन्दोलन को तीन भागो मे विभाजित किया गया है जिसमे तीसरे चरण को गाँधी युग के नाम से हम लोग जानते है क्यो कि गाँधी जी के नेतृत्व मे ही राष्ट्रीय आन्दोलन चलाया गया था। गाँधी जी के नेतृत्व मे असहयोग आन्दोलन पहला अखिल भारतीय स्तर का आन्दोलन था जिसका प्रमुख कारण निम्नलिखित है :-

प्रथम विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि समस्या ने ये इस आन्दोलन के उदय मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा दिया।

सर सिडनी रालेक्ट ने जो एक्ट प्रस्तुत किया था उसके अनुसार शक के आधार पर किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करके सजा देकर जेल मे कैद किया जा सकता था लेकिन अंग्रेज और एग्लोइंडियन इस कानून की परिधि से बाहर थे। इस लिए यह एक्ट भी आन्दोलन का कारण बन गया।

के रूप मे स्थापित है। गाँधी जी ने स्वयं बिहारियो को इस आन्दोलन मे सहयोग के लिए आभार प्रकट किया था और 1931 मे बिहार विद्यापिठ की स्थापना किया गया जिसके प्रथम कुलपति मजहरूल हक को बनाया गया इसके साथ ही देश घर विद्यापिठ की भी स्थापना किया गया।

यह आन्दोलन तेज गति से आगे बढ़रहा था तब 1922 ई० मे चौरी-चौरा नामक स्थान पर 22 पुलिस कर्मियो को आततोगो ने हत्या कर दिया था जिससे नाराज होकर गाँधी जी ने आन्दोलन को समाप्त घोषित कर दिया था। यह आन्दोलन ~~असे को~~ असफल ~~हो गया~~ हुआ लेकिन रचनात्मक कार्यक्रम अभी भी आरी था जिसपर चलकर 1930 ई० मे सविनय अवज्ञा आन्दोलन को आरंभ किया गया।

*** *** ***

15 अप्रैल 1919 मे माइकल - O - ड्वायर के आदेश पर अमृतसर के जालियावाला बाग मे हजारो निर्दोषो की हत्या करा दिया गया था जिससे क्षुब्ध होकर अंग्रेजी सरकार को गाँधी जी ने शैतानी सरकार कह दिया और आन्दोलन करने का निर्णय लिया।

जब ब्रिटेन प्रथम विश्व युद्ध मे विजयी हुआ तब तुर्की के खलिफा के साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया जिसके विरोध मे भारतीय मुस्लिमो ने खिलाफत आन्दोलन शुरू किया और अखिल भारतीय खिलाफत कमिटी का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष गाँधी जी को बनाया गया। इस प्रकार इस आन्दोलन ने भी असहयोग आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

असहयोग आन्दोलन के दो कार्यक्रम निर्धारित किए गए थे। रचनात्मक एवं नकारात्मक। रचनात्मक के अन्तर्गत सूत कातना, 1 करोड़ सदस्य बनाना, 25 पैसा सदस्यता शुल्क, तिलक स्वराज्य फण्ड की स्थापना, सत्याग्रह सभा की स्थापना आदि कार्यक्रम को शामिल किया गया था। नकारात्मक के अन्तर्गत स्कूल, कॉलेज, सरकारी कार्यालय, विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार किया गया था।

यह आन्दोलन एक अगस्त 1920 से प्रारंभ हुआ। इसका प्रभाव भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे दिखलाई पड़ता है। इस आन्दोलन मे बिहार ने भी मुख्य भूमिका निभाया जिसमे प्रमुख रूप से डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, मजहरूल हक एवं ब्रजकिशोर आदि शामिल थे। बिहार शरीफ मे उलेमा सम्मेलन का आयोजन कर बिहार के मुस्लिमो ने इस आन्दोलन मे सहयोग प्रदान किया। भागलपुर मे प्रांतिय कांग्रेस सम्मेलन का आयोजन कर इस आन्दोलन के प्रस्ताव को पारित कर दिया गया जिसके अध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र प्रसाद थे। कम ही समय मे यह आन्दोलन सारण, चम्पारण, मुज्जफरपुर, भागलपुर, गया आदि के क्षेत्रो मे फैल गया। मजहरूल हक ने अपने प्रसिद्ध पत्रिका मदरलैण्ड के माध्यम से इस आन्दोलन का प्रचार प्रसार किया। पटना गया मार्ग पर विश्व विद्यालय की स्थापना किया गया। मजहरूल हक के मित्र खैरू मियाँ के जमीन पर मजहरूल ने सदाकत आश्रम की स्थापना किया जहाँ से आन्दोलन को संचालित किया गया। वर्तमान मे यह आश्रम बिहार प्रादेशिक कांग्रेस के कार्यालय